हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17–HL–**HL9**

निर्धारित समयः तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंकः 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): अनुपम जाखड़.

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 9 | 16/10/2017

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]: 0 0 9 5 5 3 7

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Anup

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं।

*परीक्षार्थी को कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर देने हैं।*

प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

उत्तर हिन्दी (देवनागरी लिपि) में ही लिखे जाएंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 125

टिप्पणी (Remarks): प्रयास संतोषजनक है। उत्तरों को और बेहतर बनाने का प्रयत्न करते रहें।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेलः helpline@groupdrishti.com, वेबसाइटः www.drishtiIAS.com
फेसबुकः facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटरः twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: $10 \times 5 = 50$

(क) नाथ-साहित्य में खड़ी बोली हिन्दी का प्रारंभिक स्वरूप

नाथ-साहित्य में खड़ी बोली हिन्दी का प्रारंभिक स्वरूप दिखता है। नाथ-सम्प्रदाय बुद्ध बौद्ध धर्म की परंपरा से विकसित हुआ। यहाँ पर धार्मिक पाखण्ड व सामाजिक कुरीतियों पर व्यंग्य किया गया है। इसका उदाहरण दृष्टव्य है-

'मन चंगा तो कठौती में गंगा'

यहाँ ब्रजभाषा का प्रभाव दिखाई देता है। 'ठौ' का प्रयोग भी देता है। कारक - चिह्नों व विभक्ति का स्वरूप नहीं दिखाई देता है। यह उदाहरण खड़ी बोली के आंशिक संकेत समेटे हुए है - ~~हिन्दी मु~~ 'हबकी न बोलिबा
ठबकी न चलिबा
गरब न करिबा
भणत गोरखनाथ'

इस प्रकार खड़ी बोली के आंशिक प्रमाण यहाँ मिलते हैं। इसी भाषा के संस्कार ग्रहण करके कबीर ने दोहा छंद, गुरु की महिमा तथा धार्मिक पाखण्ड के खिलाफ आवाज उठाई थी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1 डॉ. का प्रयोग, आकारांत शब्द के आंशिक प्रमाण भी नव-साहित्य की भाषा में मिलते हैं। यहाँ पर भाषा संक्रमण काल से गुजर रही थी इसलिए स्पष्ट रूप नहीं है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) अपभ्रंश की कारक-व्यवस्था

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आरंभिक/
अपभ्रंश भाषा → अवहट्ट → पुरानी हिन्दी
500-900ई. 900-1100ई. 1100-1350ई.

अपभ्रंश भाषा में 'हि' विभक्ति से सारी विभक्तियाँ प्रयुक्त होती थी -

'देहहि कुछ बसत न भागऊ'

यहाँ पर निर्विभक्तिकरण की प्रक्रिया आरंभ हो चुकी थी। विभक्ति की जगह कारक चिह्नों का प्रयोग प्रारंभ हो जाता है।

अपभ्रंश भाषा में 'का' विभक्ति चिह्न का प्रयोग प्रारंभ हो जाता है। कर्ता व कर्म के साथ ~~विभक्ति~~ कारक चिह्नों का प्रयोग होता था।

अपभ्रंश के बाद अवहट्ट व पुरानी हिन्दी में धीरे-धीरे और कारक चिह्न आ गये। अतः अपभ्रंश से प्रारंभ होने वाली परंपरा यहाँ आकर परिणत होती है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिंदी भाषा और 'केंद्रीय हिन्दी निदेशालय'

हिन्दी भाषा के मानकीकरण के प्रयास स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद तेजी से हुये। इसमें केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की भूमिका महत्वपूर्ण है।

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय नये शब्दों के निर्माण, पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण तथा अनुवाद के कार्यों की देखरेख करता है। इसके अन्तर्गत केन्द्र वैज्ञानिक व तकनीकी शब्दावली आयोग तथा विधायी शब्दावली आयोग की महत्वपूर्ण भूमिका है।

वैज्ञानिक व तकनीकी शब्दावली आयोग हिन्दी को आधुनिक ~~xxx~~ प्रयोजनों के अनुकूल बनाने का प्रयास कर रहा है यह नये शब्दों का निर्माण करने में महत्वपूर्ण है। नये शब्दों के निर्माण हेतु पारंपरिक, अन्तर्राष्ट्रीय तथा नवीन ~~शब्दों~~ पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है।

हिन्दी भाषा को प्रबंधन तकनीकी, आर्थिक तथा विधायी प्रयोजनों के अनुकूल भाषा बनाने हेतु केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की भूमिका महत्वपूर्ण है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

3 हालांकि शब्द निर्माण के क्षेत्र में कार्य की गति धीमी है फिर भी हिन्दी निदेशालय की भूमिका महत्वपूर्ण हो जरूरत है प्रयास में तेजी लाने तथा राजभाषा विभाग व भाषा विद् विषय विशेषज्ञों के साथ मिलकर कार्य करें।

4½/10

और गहराई लाते। स्थापना वर्ष व मंत्रालय भी बताते

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) केलॉग का हिन्दी व्याकरण

हिन्दी व्याकरण को मानक बनाने के प्रयास 20वीं सदी के प्रारंभ में महत्वपूर्ण थे। सरस्वती पत्रिका का इसमें महत्वपूर्ण योगदान है परंतु इसके अलावा फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना के साथ ही हिन्दी व्याकरण के प्रयास प्रारंभ हो गये थे

विदेशी प्रयासों में ई- ग्रीव्स, गार्सा द तासी, जॉन गिलक्रिस्ट तथा केलॉग का योगदान महत्वपूर्ण है। यह हिन्दी व्याकरण जो केलॉग के द्वारा लिखा गया व्याकरण के मानकीकरण व स्वरूप निर्धारण की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

इसमें हिन्दी के विभक्ति चिह्नों को स्वीकारा गया। निर्विभक्तिकरण को स्वीकार किया गया।

3/10
अपेक्षा अपेक्षित

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) राजभाषा अधिनियम, 1963

हिन्दी राष्ट्रीय आंदोलन की भाषा बनी थी। गाँधीजी के नेतृत्व में इसे राष्ट्रभाषा बनाने की पुरजोर कोशिश हुई।

इसके संविधान में इसे 1950 में राजभाषा का दर्जा दिया गया। भाग 17, अनुच्छेद 343 से 351 राजभाषा पर केन्द्रित है। प्रथम 15 वर्षों के लिए हिन्दी के साथ अंग्रेजी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया।

राजभाषा आयोग डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की अध्यक्षता में बना तथा हिन्दी के मानकीकरण के प्रयास हुये। इसके पश्चात 1963 में राजभाषा अधिनियम पारित हुआ।

इसके तहत हिन्दी को आधिकारिक तौर पर राजभाषा बनाने हेतु राजभाषा विभाग भी बनाया गया। इसका उद्देश्य हिन्दी को सशक्त बनाना था।

परंतु देशव्यापी विरोध के कारण हिन्दी को यह अधिकार नहीं मिला। दक्षिणी राज्यों तथा पश्चिम बंगाल में यह विरोध हुआ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

त्रिभाषा सूत्र के द्वारा हिन्दी को राजभाषा बनाने का प्रयास किया गया परंतु इसकी पालना खानापूर्ति के तौर पर की गई। इस प्रकार राजभाषा अधिनियम से जो स्वप्न हिन्दी के सं लिए संजोये गये वे आज भी अधूरे हैं,

5/10

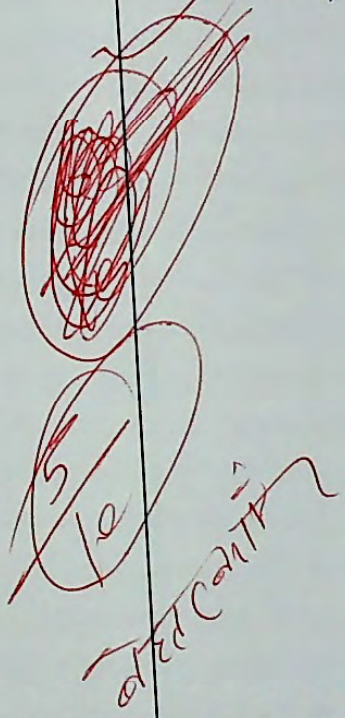

बहुत कमियाँ

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

4. (क) देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु सुझाव दीजिए। 20

देवनागरी लिपि हिन्दी भाषा की लिपि होने के अतिरिक्त मराठी सहित अन्य भारतीय बोलियों से भी जुड़ी हुई है। इसके मानकीकरण के प्रयास स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद तेजी से हुये। स्वतंत्रता से पूर्व महावीर प्रसाद द्विवेदी, काका कालेलकर व कामता-प्रसाद गुरु ने प्रयास किये।

निरंतर परिवर्तन तथा अति वैज्ञानिक लिपि होने के कारण मानकीकरण की समस्या हमेशा बनी रहती है। अतः मानकीकरण के निम्नलिखित सुझाव देवनागरी को और वैज्ञानिक व सामासिक बना सकते हैं-

~~1) कुछ ध्वनियाँ~~

ध्वनियों के आधार पर

1) कुछ ध्वनियाँ ~~व चिह्न~~ जैसे लृ, ॠ, ष का प्रचलन कम हो गया है तथा इनकी जगह अन्य चिह्न प्रयोग में हैं। ~~अतः~~ इसलिए इनके लिए समुचित नियम बनाये जाये।

2) कुछ विदेशी ध्वनियाँ जैसे डॉक्टर, ख्वाब हिन्दी में बहुतायत से प्रयुक्त होने लगी हैं। इसलिए इनको स्वीकार किया जाए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

3) अन्य चिह्नों जो भारतीय भाषाओं के हिन्दी में नहीं हैं उनमें भी सम्मिलित किया जाए।

संयुक्त व्यंजनों के लिए सुधार

1) ~~कुछ~~ संयुक्त व्यंजनों के लिखने में समस्या व द्विरूपता की समस्या है। जैसे - विद्यालय व विद्यालय। अतः इसे सही किया जाना चाहिए।

2) 'र' का प्रयोग चार-पाँच तरीकों से किया जाता है। इसके नियम तय किये जाएँ। जैसे

क्रम, कार्य, वृत्त,

3) क्ष, त्र, ज्ञ को इस रूप में स्वीकार किया जा चुका है अतः इसे जारी रखना चाहिए।

द्विरूपता की समस्या :-

1) 'ख' तथा 'रव' दिखने में समान हैं। इसका निदान भी आवश्यक है।

2) घुण्डी का प्रयोग किया जाना चाहिए जिससे शब्दों को पहचानना आसान हो। जैसे -

भ, म

3) झ तथा झ - एक ध्वनि के दो चिह्न इनका निदान भी आवश्यक है।

अन्य समस्याएँ :-

1) तिरछी का प्रयोग जहाँ तक संभव हो नहीं किया जाना चाहिए।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2) हलंत् का प्रयोग भी दुरूहता का कारण है। इसे जहाँ तक संभव हो नहीं प्रयुक्त किया जाए।

3) अनुस्वार व अनुनासिक का प्रयोग सही तरीके किया जाये। अनुनासिक के लिए चन्द्रबिंदु का प्रयोग किया जाये। अनुस्वार के लिए बिन्दी का प्रयोग किया जाए अगर अगला वर्ण समान वर्ग का हो अन्यथा अपने मूल रूप में किया जाए।

3) अर्द्ध वर्णों के लेखन में भी समस्या है। जैसे क → क तथा द → द् या अगले वर्ण में मिला दिया जाता है। इसके लिए नियम तय किया जाना चाहिए।

4) पंचमाक्षरों का प्रयोग नहीं होना चाहिए (उनकी जगह अनुस्वार का प्रयोग उचित है) परंतु ये चिह्न रखने चाहिए क्योंकि कुछ ~~जगह~~ जगह ~~अनुस्वा~~ अनुस्वार का प्रयोग उचित नहीं होगा जैसे— वाङ्मय

इस प्रकार देवनागरी लिपि में सुधार करके इसे टंकण, मुद्रण के लिए आसान तथा समावेशी बनाया जा सकता है।

Good

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) व्यावसायिक शिक्षा के संदर्भ में हिंदी में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के विकास को आप संतोषजनक मानते हैं? विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

व्यावसायिक शिक्षा के लिए हिन्दी की शब्दावली इन प्रयोजनों के अनुकूल होनी चाहिए। केन्द्रीय निदेशालय, वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली आयोग तथा विधायी शब्दावली आयोग की भूमिका इसके लिए महत्वपूर्ण है।

शब्द निर्माण व अनुवाद की दृष्टि से काफी प्रगति हुई है। हिन्दी में अनुवाद कार्य तेजी से हुआ। परंतु शब्दों का निर्माण संतोषजनक नहीं है। अगर पूर्ण मन से कोशिश की जाये तो यह कार्य संभव है।

पारिभाषिक शब्दों का निर्माण व्यावसायिक शिक्षा के संदर्भ में जरूरी है। इसके लिए विषय विशेषज्ञों की सहायता अपेक्षनीय है। वर्तमान में शब्द निर्माण की गति तथा गुणवत्ता दोनों में समस्या है। यह शब्द या तो क्लिष्ट हैं या फिर इनकी अर्थगम्यता में कमी है।

नये शब्दों का निर्माण निरंतर प्रक्रिया है। इसके लिए सतत प्रयास आवश्यक है। विधायी शब्दावली आयोग ने महत्वपूर्ण कार्य किया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रयोग की दृष्टि से हिन्दी का
व्यास व्यावसायिक शिक्षा में पिछड़ा स्थान है। आज 70 वर्षों के बाद भी अंग्रेजी ही विज्ञान, आभि अभियांत्रिकी तथा प्रबंधन के पाठ्यक्रम का माध्यम है परंतु बी. ए. व बी. एससी. के पाठ्यक्रम हिन्दी में उपलब्ध हैं।

गाँधीजी ने कहा था कि अगर मैं तानाशाह होता तो हिन्दी को सम्पूर्ण देश में लागु कर देता। परंतु स्वतंत्रता संग्राम का वह स्वप्न अधूरा है। आज ग्रामीण भारत का छात्र, युवा अंग्रेजी के अल्प ज्ञान की वजह से पिछड़ रहा है। इससे बेरोजगारी तथा ग्राम-शहर की खाई बढ़ती जा रही है।

व्यावसायिक शिक्षा अगर हिन्दी में प्रारंभ हो जाये तो ग्रामीण भारत भी उन्नति की राह पर चल सकता है तथा देश के विकास का इंजन बन सकता है।

6/15

प्रश्नानुरूप (१५०) [illegible] लाएँ

मॉडल उत्तर देखें

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) दक्खिनी हिन्दी के विकास में आदिलशाही वंश के शासकों की भूमिका पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अगर हिन्दी को राष्ट्रभाषा का स्वप्न पूरा करना है तो दक्खिनी हिन्दी की भूमिका महत्वपूर्ण है। यह हिन्दी खड़ी बोली की व्याकरण तथा फारसी शब्दावली लेकर उत्तर से दक्षिण में पहुँची। मोहम्मद बिन तुगलक व अलाउद्दीन के देवगिरी अभियान की भूमिका इसमें महत्वपूर्ण है।

~~आसफ शाही~~ आदिलशाही शासकों ने दक्खिनी हिन्दी को राजभाषा ~~के~~ बनाया। इसे लोग सरकारी जबान कहते थे। फरिश्ता ने कहा कि सरकारी कामकाज इसी भाषा में होता है।

सनअत अली ने कहा कि- 'जिसको ~~ब~~ फारसी का न कुछ ज्ञान है उसे ~~सरकारी~~ दक्खिनी जबान आसान है।' बहमनी काल में दक्खिनी हिन्दी के गद्य व पद्य साहित्य की रचना हुई।

वली दक्खिनी ने गजल भी दक्खिनी हिन्दी में लिखे - "दिल वली का ले लिया दिल्ली ने कोई मुहम्मद शाह से कह दो।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आदिलशाही शासकों के काल में दक्खिनी हिन्दी दक्षिण भारत में फैली इसकी मूल व्याकरण खड़ी बोली की तथा शब्दावली मिश्रित थी।

6/11

और गहराई लाएं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

10 × 5 = 50

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए:

(क) विद्यापति की राधा

विद्यापति को 'मैथिल कोकिल' के नाम से जाना जाता है। इनकी प्रसिद्ध रचना 'कीर्तिलता', 'पदावली' हैं। पदावली एक मुक्तक रचना है जिसमें राधा-कृष्ण का वर्णन ~~ह~~ हुआ है।

विद्यापति की राधा शृंगारिक है तथा अपने सौंदर्य से कृष्ण को मोहित करती है। श्रीकृष्ण उसके सौंदर्य पर मोहित होकर कहते हैं–

"बड़ कौशल तुअ राधे
किनल कन्हाई लोचन आधे"

इस तरह राधा का अधखुली नेत्रों से कृष्ण को देखना शृंगारपरक है। सूर की राधा एक अनुरागमयी बालिका, प्रेममयी किशोरी, रसमयी कामिनी तथा विरह-विदग्ध स्वकीया थी परंतु यहाँ राधा अधिक वाचाल है।

राधा का चांचल्य विद्यापति की राधा को जयदेव के 'गीतगोविन्द' की राधा के अधिक समीप ~~रखता है~~ रखता है। राधा कृष्ण के सौंदर्य पर मोहित है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तथा अपनी सखी से कहती है –

"ए सखि पूछसि अनुभव मोय
जनम अवधि भर रूप निहारल
नैन न तिरपित भेल"

इस प्रकार राधा जन्म भर श्रीकृष्ण के रूप को ~~निस~~ निहारना चाहती है। यह राधा शृंगारिक व प्रेममयी है जो महाभारत से अलग लौकिक है। व्यावहारिक राधा अपनी वय: सन्धि, मुद्राओं से कृष्ण को मोहित करती है।

5½/10
औसत है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, बेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ख) मुक्त छन्द

छन्दों का संस्कार हिन्दी भाषा ने संस्कृत से ग्रहण किया। यह पारंपरिक अर्थों में रसवादी आलोचना में साहित्य का अनिवार्य अंग माना गया। समय के साथ इसमें परिवर्तन हुआ। तुलसी ने 'रामचरितमानस' को छंद मुक्त रचना बनाया तथा 'राम की शक्ति पूजा' में निराला ने इसे छन्द मुक्त कर दिया

निराला कहते हैं मनुष्य की मुक्ति साहित्य से है तथा साहित्य की मुक्ति छंद से मुक्ति में हो यद्यपि 'राम की शक्ति पूजा' सुसम्बद्ध रचना है फिर भी यह छंद मुक्त हो 'कुकुरमुत्ता' में निराला छंदों से पूर्णतः मुक्त हो जाते हैं।

छायावाद के बाद की रचनाओं में प्रायः छंद से अनासक्ति दिखाई देती हो प्रगतिवादी कवियों ने छंद, अलंकार, प्रतीकों का निषेध किया तथा 'वस्तु' को 'शिल्प' से अधिक महत्व दिया। मुक्तिबोध ने 'फैंटेसी' शिल्प का प्रयोग करके हिन्दी को एक नया शिल्प विधान दिया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसी प्रकार अज्ञेय ने कहा कि अभिव्यक्ति के नये प्रतिमान गढ़ने होंगे -

" ये उपमान अब मैले हो गये हैं
देवता इन प्रतीकों के कर गये हैं
कूच "

अतः आधुनिक मुक्त छंद की तरफ प्रवाहित हुआ।

4½/10

उत्तर में गहराई लाएं।
मॉडल उत्तर देखें।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ग) उपन्यासकार मैत्रेयी पुष्पा

उपन्यासकार मैत्रेयी पुष्पा हिन्दी नवलेखन दौर की प्रमुख हस्ताक्षर है, महिला हिन्दी लेखन धारा में मन्नू भण्डारी के बाद मैत्रेयी पुष्पा का नाम लोकप्रिय है।

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास सामाजिक जीवन की समस्याओं को अभिव्यक्त करते हैं। समकालीन उपन्यास अपने अंदर विविध विषय समेटे हुए हैं।

आधुनिक उपन्यासों में बदलते ~~रि~~ रिश्ते, नयी सामाजिक संरचना, शहरीकरण, संवाद करना तथा संबंधों की टूटन दिखाई देती है। यह प्रवृत्ति मैत्रेयी पुष्पा के ~~निबंधों~~ उपन्यासों में भी परिलक्षित होती है।

उपन्यासकार मैत्रेयी पुष्पा का योगदान हिन्दी भाषा के अन्य रूपों ~~—~~ निबंध व कहानियों में भी प्रमुख है।

2/10

अस्पष्ट और अपूर्ण

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) घनानंद का काव्य-शिल्प

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

घनानंद की रचनाएँ मुक्तक व प्रबंध दोनों में मिलती हैं। घनानंद रीतिकालीन कवि थे। इन्होंने शृंगार परक रचनाएँ नहीं लिखी तथा रीतिमुक्त कवि की श्रेणी में रखा गया।

घनानंद को प्रेम की पीर का कवि कहा जाता है। शुक्ल जी ने घनानंद को प्रेम सबसे धीर पथिक बताया। मुक्तक रचनाओं में इन्होंने ~~[illegible]~~ कवित्त, सवैया छंद का प्रयोग किया तथा प्रबंध रचनाओं में दोहा छंद का प्रयोग।

इनकी रचनाओं में प्रयुक्त भाषा शुद्ध ब्रजभाषा है। दिनकर जी इनकी तारीफ की है इनके लिए कहा जाता है, "जो समुझे कविता घनानंद की नेह की पीर तकी"

अलंकारों का प्रयोग रचना की अभिव्यक्ति को सुदृढ़ करने के लिए किया। ~~मानवीकरण~~ विरोधाभास अलंकार देखने को मिलता है—
'उजरनि बसि हमारी अँखियानि देखो'।

इस प्रकार घनानंद का काव्य शिल्प उत्कृष्ट है। यह लक्षण ग्रंथ-परंपरा से अलग है तथा

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

नीतिशास्त्र में उच्च स्थान रखता है।

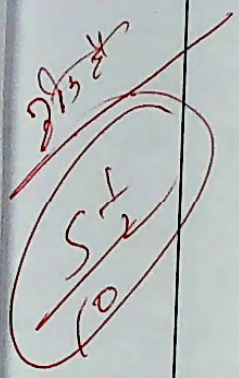

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) 'अंधा युग' नाटक का महत्त्व

'अंधा युग' नाटक धर्मवीर भारती द्वारा रचित है। धर्मवीर भारती का यह नाटक गीति-काव्य की श्रेणी में आता है। इसका योगदान अविस्मरणीय है। नाटक के क्षितिज को विस्तार देते हैं।

यह नाटक युद्ध की विभीषिका का वर्णन करता है। यहाँ पर युद्ध के उपरांत युयुत्सव युधिष्ठिर का संवाद है। इसमें दर्शाया गया है युद्ध हमेशा विनाशकारी होता है। इसमें सही व गलत का पक्ष नहीं होता है। इसमें गलत व अधिक गलत का पक्ष होता है।

'अंधा युग' नाटक द्वितीय विश्वयुद्ध के उपरांत लिखा गया। इसमें उसके बाद का वातावरण प्रतीकात्मक रूप ले है। युद्ध के भीषण नुकसान से उभरने की कोशिश कर रहे समाज को यह नाटक एक दिशा देता है। कुरुक्षेत्र में रामधारी सिंह दिनकर ने भी युद्ध का शाश्वत चित्रण किया है, परंतु उन्होंने अन्याय के विरुद्ध युद्ध को सही ठहराया।

'अंधा युग' नाटक में संवाद गीतों के रूप में है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसका मंचन आसान है तथा सर्वाधिक मंचित नाटकों में से एक है। इस नाटक का शिल्प व संवेदना दोनों दृष्टि से नाटक को अमूल्य योगदान है।

उचित है।

5½/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

[illegible]

नामवर सिंह ने छायावाद को आचार्य शुक्ल की रसवादी आलोचना से मुक्त कराया। उन्होंने रहस्यवाद, मर्यादा व नैतिकता के आवरण को उतारकर उन्होंने छायावाद को एक नई व्याख्या दी। इन्होंने छायावाद को स्वतंत्रता की चेतना बताया। यह चेतना साम्राज्यवाद, सामन्ती बन्धनों, पारंपरिक रीति-रिवाजों के खिलाफ थी।

नामवर सिंह का प्रमुख योगदान हिन्दी आलोचना को लिखित रूप से निकालकर मौखिक व वाचिक रूप में ले जाना माना जाता है। इनके प्रयासों से आलोचना-कर्म को प्रसिद्धि मिली।

प्रगतिवादी आलोचना साहित्य के पीछे आर्थिक कारणों को देखती है। इनकी आलोचना में भी यह तत्व विद्यमान है। इन्होंने मुक्तिबोध, निराला तथा नई कहानियों की आलोचना की है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मुक्तिबोध प्रगतिवादी होने के बावजूद भी शिल्प के प्रति सजग थे। फैंटेसी शिल्प का प्रयोग एक नव्य प्रयोग था। डॉ. रामविलास शर्मा ने अपनी आलोचना में इसे लकड़तोड़ भाषा कहा। डॉ. नामवर सिंह ने 'ब्रह्मराक्षस' की भाषा को मौलिक काव्यभाषा कहा। इन्होंने फैंटेसी शिल्प की व्याख्या करते हुए कहा कि रचनाकार दुनिया बदलने के लिए अपनी रचना की ही दुनिया बदल देता है।

नामवर सिंह की आलोचना नई कहानियों को भी छूती है। इनकी रचना 'नई कहानी - नये प्रतिमान' इस दृष्टि से महत्व रखती है।

इस प्रकार डॉ. नामवर सिंह ने हिन्दी आलोचना के कार्यक्षेत्र को विस्तार दिया। शुक्लोत्तर आलोचना में प्रगतिवादी आलोचना के कर्मक्षेत्र में इनकी भूमिका डॉ. रामविलास शर्मा के बाद सर्वाधिक महत्व रखती है।

प्रगतिवादी आलोचना साहित्य को समाज की उपयोगिता के प्रसंग से देखती है। डॉ. नामवर सिंह

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

ने डॉ. रामविलास शर्मा की तरह आक्रामक शैली में आलोचना नहीं की उनकी आलोचना दृष्टि समकालीन साहित्य को समेटती है तथा आलोचना धर्म को पूर्णता प्रदान करती है।

20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) पृथ्वीराजरासो की काव्यगत विशेषताओं पर विचार करते हुए उसकी प्रामाणिकता के प्रश्न पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पृथ्वीराजरासो हिन्दी साहित्य का प्रथम महाकाव्य माना जाता है। इसकी रचना चारण कवि चन्दरबरदाई ने की है। इसकी कथावस्तु पृथ्वीराज चौहान को केन्द्र में रखकर लिखी गई है।

रासो काव्य अपनी वीरता प्रधान व शृंगारप्रधान शैली के लिए प्रसिद्ध हैं। ये विशेषताएँ यहाँ पर भी दृष्टिगोचर होती हैं। रासो पृथ्वीराज रासो एक महाकाव्य जिसका नायक उदात्त है तथा सभी इसकी पात्र-योजना, घटना वर्णन भी विशेष है।

छंदों के वैविध्य तथा रसों के प्रयोग की दृष्टि से रचना अति महत्व रखती है। 68 से भी ज्यादा छंद इस रचना में प्रयुक्त हुए हैं। वीर रस व शृंगार रस इस रचना में प्रमुख हैं।

संवादशैली, उक्ति वैचित्र्य की दृष्टि से भी पृथ्वीराज रासो एक श्रेष्ठ रचना है। भाषा के ऊपर विवाद है। इसकी भाषा पिंगल मानी गई है। पिंगल शैली राजस्थानी मिश्रित ब्रजभाषा का आरंभिक स्वरूप है। इसमें डिंगल अर्थात राजदी के तत्व भी उपलब्ध हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता पर प्रश्न उठाये जाते हैं। इसके अंतिम भाग पर इतिहासकारों में सहमति है कि यह सत्य नहीं है। कर्नल जेम्स टॉड ने 'राजपुताने का इतिहास' में पृथ्वीराज की मुहम्मद गौरी के हाथों पराजय व मृत्यु दिखाई है इसलिए इसी प्रकार इसकी ये पंक्तियाँ सिर्फ साहित्यिक रूप से सत्य लगती हैं-

"अंगुल अष्ट प्रमाण
इतै पे सुल्तान है
मत चूको चौहान"

एक अंधे आदमी द्वारा ऐसा निशाना केवल नायक को उदात्त प्रकट करने के लिए ही तार्किक प्रतीत होता है।

साहित्य इतिहास नहीं होता तथा इसकी रचना तथ्यों पर नहीं संवेदना पर आधारित होती है। इसलिए संभव है कि इसके तथ्य प्रामाणिक न हों।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) नाथ-साहित्य को प्रगतिशील चेतना का काव्य कहना कहाँ तक उचित है? अपना मत प्रस्तुत कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नाथ साहित्य प्रगतिशील चेतना का काव्य है। यह अपनी युगीन समस्याओं को व्यक्त करता है। सिद्धों के बढ़ते व्यभिचार, माँस-मदिरा सेवन का विरोध नाथों ने किया।

नाथ-साहित्य को हजारी प्रसाद द्विवेदी ने साहित्य की श्रेणी में रखकर इसे समाज का दर्पण व दीपक बताया। यहाँ पर पाखंडों का विरोध साफ दिखाई देता है-

'मन चंगा तो कठौती में गंगा'

यहाँ पर आचरण, व्यवहार के बारे में भी सामाजिक संदर्भों में बहुत कुछ लिखा गया। नाथ-साहित्य में चर्पटीनाथ का यह कथन प्रासंगिक है-

"अंदर गंदा बहर चंगा
ऊ की भूलियो चर्पट अंधा"

प्रगतिशील चेतना का तात्पर्य है समाज की उपयोगिता से काव्य लेखन। प्रगतिशील काव्य में शिल्प की अपेक्षा कथ्य पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है। अतः नाथ-साहित्य यह शर्तें पूरी करता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नाथ साहित्य में शिल्प के अभाव व उपेक्षा के कारण ही आचार्य शुक्ल ने इसे साहित्य की कोटि में नहीं रखा था। इनकी सीधी-सपाट बातों को उन्होंने धार्मिक प्रवचन माना। यह आलोचना यह प्रगतिशील चेतना की अवहेलना करती है।

इस प्रकार नाथ साहित्य से लेकर कबीर तक 'आधुनिक कबीर' नागार्जुन में प्रगतिशील चेतना विद्यमान है। नाथ-साहित्य सामाजिक समरसता पर बल भी देता है - 'हिन्दु मुसलमान खुदा के बन्दे'।

अतः प्रगतिशील चेतना के तत्व नाथ साहित्य में उपस्थित है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

7. (क) लोकजागरण के काव्य के रूप में भक्तिकाव्य का मूल्यांकन कीजिये। 20

भक्तिकाव्य की रचना मध्यकाल में हुई। समाज सामंती व्यवस्था, धार्मिक पाखण्ड तथा शास्त्रावाद, वर्ण व्यवस्था के भेद से आक्रान्त था। ऐसे में भक्तिकाव्य ने एक नई ऊर्जा का संचार किया।

लोकजागरण संतकाव्य में प्रमुखता से उभरता है। कबीर हिन्दू-मुसलमान दोनों को फटकारते हैं तथा धार्मिक पाखण्डों पर चोट करते हैं। उनको नीति की समझ भी है तथा जाति व्यवस्था पर आक्रमण भी कबीर करते हैं। कबीर एकेश्वरवाद के साथ रहस्यवाद को फेंट कर समरसता का संदेश भी देते हैं-

"जाति पाति पूछै नहीं कोई
हरि को भजै सो हरि का होय"

सूरदास व तुलसीदास ने पौराणिक नायकों राम तथा कृष्ण को पुनः समाज के केन्द्र में उपस्थित किया। सूर का वात्सल्य वर्णन अद्भुत है तथा नारी की सत्ता को पुनः उच्च स्थान दिलाता है। कृष्ण का लोकरंजक रूप समाज को जागृत करता है तथा सामंती

Copyright – Drishti The Vision Foundation

मूल्यों को कमजोर करता हो सूर कहते हैं-

सुत मुख देख जसोदा फूली
हरसाती देखि दूध की दंतुली -

तुलसी ने राम को लोकरक्षक के रूप में स्थापित किया। तुलसीदास जी ने बेरोजगारी, अकाल, जाति, अनास्था पर प्रकाश डालकर समाज में जागरण का प्रयास किया। उन्होंने नारी व पराधीनता पर कहा-

"कत विधि सृजी नारी जग माँही
पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं"

सामाजिक बुराइयों व स्थिति पर कहा-

"खेती न किसान को, भिखारी को न भीख बलि
... कहें सब एक एकन सौं
कहाँ जाई का करी"

यह "कहाँ जाई का करी" आज भी प्रासंगिक है जब देश का युवा बेरोजगारी तथा किसान कर्ज के कारण अभिशप्त है।

लोकजागरण की चेतना जायसी में भी दिखाई देती है। जायसी ने एक लोककथा को आधार बनाया। इसी लोककथा के माध्यम से

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

~~वियोग~~ नागमती वियोग को दर्शाया गया। यह मध्यकालीन नारी की स्थिति का वर्णन था। अंत में जायसी लौकिक प्रेम का संदेश देते हैं-

"मानुस प्रेम भयउ बैकुंठी"

अतः सम्पूर्ण भक्तिकाव्य अपने अंदर लोकजागरण को लिये हुए है यह एक स्वतः स्फूर्त आंदोलन था जिसने ~~मध्यका~~ मध्यकालीन बर्बरता में समाज को जागृत किया।

अच्छा है

11/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी कथा-साहित्य को काशीनाथ सिंह के अवदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी कथा-साहित्य का प्रारंभ 'एक टोकरी भर मिट्टी' से ही माना जाता है। यह कहानी 1901 ई. में लिखी गई। काशीनाथ सिंह ने अपनी कथाओं से प्रेमचंद द्वारा रचित कहानियों से शेष पक्षों को पूर्णता प्रदान की।

हिन्दी कथा-साहित्य काशीनाथ सिंह की आभारी है उनका कहानी को एक नई दिशा देने का। द्विवेदी युग में कहानी का आंशिक विकास प्रारंभ हुआ जिसे प्रेमचंद ने पूर्णता प्रदान की।

द्विवेदी युग में ऐतिहासिक कथानक, सामाजिक यथार्थवाद, रोमांचक कहानियाँ तथा समस्या प्रधान कहानियाँ लिखी गई। काशीनाथ सिंह का अवदान अतः कथा साहित्य के लिए महत्वपूर्ण है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) मुक्तिबोध की काव्यभाषा के स्वरूप पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

मुक्तिबोध की काव्यभाषा हिन्दी साहित्य में आलोचकों के मध्य, विवाद का विषय रही है। मुक्तिबोध ने प्रयोगशील तथा प्रगतिवादी कविताएँ लिखी तथा फैंटेसी शिल्प का प्रयोग करके हिन्दी में ~~नवाचार~~ नवाचार किया।

इनकी काव्यभाषा को डॉ. रामविलास शर्मा ने ऊबड़खाबड़ भाषा कहा। इनकी भाषा का स्वरूप इधर-उधर भागता रहता है। परंतु निर्मला जैन ने इनकी काव्यभाषा को अनगढ़ तेजोदीप्त भाषा कहा। इनकी काव्यभाषा एक नवीन प्रयोग ~~स~~ थी जिसमें मौलिकता थी। इसे डॉ. नामवर सिंह ने मौलिक काव्यभाषा कहा।

अंधेरे में

'~~अंधेरी नगरी~~' व 'ब्रह्मराक्षस' रचनाओं में मुक्तिबोध ने फैंटेसी शिल्प का प्रयोग किया इनकी भाषा इस शिल्प के अनुरूप थी इन्होंने तत्सम, तद्भव व विदेशी शब्दों का सहजता से प्रयोग किया -

"गिर गया वह दो कठिन ~~पहाड़ों के~~
पाटों के बीच
~~भीतरी~~ भीतरी व बाहरी
कैसी ट्रेजिडी है नीच"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मुक्तिबोध ने भाषा को महत्व नहीं दिया क्योंकि वे प्रगतिवादी रचनाकार थे वस्तु को शिल्प से ज्यादा महत्व देने के कारण शिल्प उपेक्षित पक्ष रहा।

मुक्तिबोध एक नई धारणा प्रस्तुत करना चाहते थे जिससे यथार्थ व कृत्रिम जीवन के मुखौटे उतारे जायें। परतदार सत्य का उद्घाटन करने के लिए उन्होंने ऐसी भाषा का प्रयोग किया।

इनकी भाषा में ध्वनि बिंब, घ्राण बिंब, दृश्य बिंब भी उपस्थित हैं। भाषा प्रतीकात्मक भी है। मध्यवर्ग को जागृत करने के लिए आवश्यक है कि मिश्रित भाषा का प्रयोग किया जाए। अतः मुक्तिबोध की लोक भाषा का अपूर्व महत्व है।

7½/15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation